धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अप्रैल- 2012

* जीवन के बनने के नियम
* महा दुष्ट कौन?
* कल्याण में विशेष सत्संग वा माता पिता दिवस
* पिता की भूल
* श्राद्ध की सभा
* भाई बहनों के सम्बन्ध में सभा
* शुभ संग्राम

जीवन के बनने के नियम

प्रत्येक मनुष्य जीना चाहता है (लेकिन जीने की अकांक्षा रखकर कोई नहीं जी सकता) जीने के अपने नियम हैं। नियम को अटल इसलिए कहते हैं कि वह कभी नहीं टलते। चाहे कोई जन जाने या न जाने, नियम का नतीजा ज़रूर पूरा होगा। अगर तुम चाहो कि नेचर में तुम्हारा अस्तित्व कायम रहे, तो यह देखने की आवश्यकता है कि तुम्हारे अस्तित्व के कायम होने के नियम क्या हैं? जैसे शरीर के सम्बन्ध में भी नियम हैं, वैसे ही आत्मा के सम्बन्ध में भी नियम हैं। प्रत्येक मनुष्य को अपनी गतियों को पहचाने की ज़रूरत है। कौन सी गतियां नीच हैं और कौन सी गतियां उच्च हैं? फिर केवल जान लेना ही यथेष्ट नहीं। जो भाव नीच गति करवा रहा है, उसमें परिवर्तन आने की आवश्यकता है। उच्च परिवर्तन उच्च भावों से आता है। यह प्रभाव प्रत्येक अधिकारी आत्मा को देवात्मा से मिल सकते हैं। कोई भी जन तजरबा करके देख सकता है। समाज में रहकर भी एक एक जन का पतन हो सकता है और होता है। क्यों? इसलिए कि देवात्मा के देव प्रभावों का मिलना बन्द हो जाता है।

परिवर्तन दो प्रकार का है। एक निराकांक्षित परिवर्तन और दूसरा आकांक्षित परिवर्तन। तुम में से बहुतों में जो परिवर्तन आया है वह निराकांक्षित है (अर्थात तुमने खुद नहीं चाहा कि तुम में उच्च परिवर्तन आवे) कितने ही जन हैं, जिनमें और अधिक परिवर्तन आना चाहिए। हम यत्न करते हैं कि उनमें बेहतरी आवे। आकांक्षित परिवर्तन के बिना सब विनष्ट होने के लिए हैं। ऐसी अवस्था रखकर बेशक कोई खुश रह सकता है, परन्तु उसका नष्ट होना आवश्यक है।

यह जानने की आवश्यकता है कि जीवन दाता से कटकर एक एक जन का आत्मा नीच बनता है, अन्धकार ग्रस्त हो जाता है और कठोर बन जाता है इसलिए जब तक तुम्हारे साधन देव प्रभाव दायक न हों, तब तक तुम्हारा भला नहीं हो सकता। हम पूछते हैं कि तुम्हारा धर्म जगत में जन्म हुआ है या नहीं? धर्म जगत में जन्म होने पर यह आकांक्षा पैदा होती है कि मेरा नीच गतियों से उद्धार हो। मेरे भीतर उच्च गतियों का विकास हो। इसमें जो कुछ जाता हो जावे, रहता हो रहे। याद रखो, नेचर के किसी अस्तित्व को सताकर या मारकर तुम उसके नुकसान से नहीं बच सकते, क्योंकि तुम सारे विश्व का एक अंश हो। तुम ज़हर को खाकर उसके नुकसान से नहीं बच सकते। तबाही से नहीं बच सकते। बेशक तुम अन्दर विकार या मैल को छुपा कर रख सकते हो, उससे तुम मरोगे ज़रूर।

देवात्मा की बाणी

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 4

अप्रैल – 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

महा दुष्ट कौन?

प्रत्येक मनुष्य के सोच विचार का स्तर, उसके जीवन स्तर पर आधारित होता है। इसलिए मनुष्य की सोच विचार एक दूसरे से बहुत भिन्न होती है। एक से दूसरे जन की सोच विचार में ज़मीन आसमान का अन्तर हो सकता है।

साधारण मनुष्य दुष्ट उस मनुष्य को कहता है जो बहुत खराब काम करता हो, जो अपने अदना सुखों का दास होकर और अस्तित्वों को अकारण दुख और सन्ताप देता हो, जो घोर नशई और उपद्रवी हो, जो मांसाहारी हो और अन्य जीवों का प्रतिदिन वध करे, खून बहाए, चोरियां या डाके डाले, जो कातिल वा घातक हो, जो उपकारियों को अकारण सताए, जो माता पिता को धक्के मारे, बुरा भला कहे, पत्नी पर हररोज़ हाथ उठाए, दूसरों के हक छीनता हो, दूसरों के पैसों, इज्जत और जान की हानि करता हो। ऐसे जीव को, असामाजिक प्राणी को, आम साधारण इन्सान दुष्ट कहकर पुकारता है। यह आम सोच है।

लेकिन, उच्च जीवन धारी, महा पुरुषों की सोच बेहद ऊंची होती है। वह केवल उपरोक्त घोर अपराधी जनों को ही दुष्ट नहीं देखते, वह सूक्ष्म से सूक्ष्म दोष करने वाले को महा दुष्ट के रूप में देखते हैं। महा पुरुषों या महान जीवन धारियों की गरैमर (व्याकारण) बहुत भिन्न, सूक्ष्म और महान होती है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज की दृष्टि बहुत ही ऊंची और महान थी। वह अपने आपको और उस व्यक्ति को महा दुष्ट की संज्ञा देते थे कि जिसका ध्यान केवल दूसरों के अवगुणों की ओर ही जावे, जो केवल दूसरों के सच्चे वा झूठे दोषों का प्रचार करता रहे, जिसका ध्यान कभी भी अपनी ओर न जावे, जो अपने नीच जीवन को न देख सके, ऐसा व्यक्ति श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज की दृष्टि में महा दुष्ट है। वह महाराज के सम्बन्ध में एक पत्र में लिखते हैं, "मुझ महा दुष्ट की निगाह कभी मेरी नीचता की ओर नहीं गई।" नीच अंह का अधिकार मनुष्य का ध्यान अपनी किसी भी नीचता की ओर जाने नहीं देता। जब मनुष्य के हृदय में अंह का अधिकार बढ़ जावे तो वह श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की दृष्टि में महा दुष्ट हो जाता है। वह फरमाते हैं, "मेरे अहं ने मेरे ऊपर अधिकार पाकर मुझे कहां पहुंचा दिया

और और मुझे बिल्कुल पागल और अन्धा बनाकर किस महा विनाशकारी गति का राही बना दिया।"

"आपके परम हितकर्ता और कल्याणकारी रूप से मुझे बहुत दूर फैंक दिया। मेरे नीच अंह ने केवल यही नहीं कि मेरी इस अधोगति प्राप्त अवस्था का मुझे पता नहीं लगने दिया, उल्टा झूठ मूठ इस धोखे में डाले रखा कि मैं तो धर्म जीवन लाभ कर रहा हूं। मैं तो जीवन दाता के निकट से निकट होता जा रहा हूं।"

जो मनुष्य अंह के कारण पागल और अपने हित और अहित से बेसुध हो जाता है वह श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की दुनिया में दुष्ट हो जाता है। जो मनुष्य अपने हितकर्ता का विरोधी हो जाता है, वह महा दुष्ट बन जाता है। जो अपने हित के सम्बन्ध में किसी भी बड़े से, किसी भी उपकारी या हितकारी से कोई बात सुनना न चाहे, वह महा दुष्ट। जो अपनी नीचता की तरफ ज़रा भी ध्यान न ले जाना चाहे, वह महा दुष्ट होता है। श्रद्धेय श्रीमान जी अपने पत्र में इस प्रकार फरमाते हैं: -

"अहं के अधिकार ने उल्टा मुझे पागल, अपने हित और अहित से बेसुध और अपने हित और हितकर्ता से विरोधी बना दिया कि आपने जब कभी मेरी यह दुरावस्था देखकर और मेरे पर तरस खाकर, मेरी यह भयानक गति मुझ पर प्रगट करनी चाही तो मैं ने उल्टा दुखी होने पर ऐसे जिकर करने पर भी तकलीफ दायक और नागवार अनुभव करना शुरू किया। बेशक अब मैं आपकी विशेष मेहरबानी के साथ यह तो अनुभव करता हूं कि मैं बहुत नीच और दुष्ट हूं। मैं आपसे बहुत दूर हूं। मैं धर्म विहीन और नीच गतियों के अधीन हूं। मैं जो आपसे परे परे रहना चाहता हूं, और अपने हित के विषय में कोई बात सुनना नहीं चाहता और जिस तरफ आप मेरे विचार को, मेरे हित के लिए ले जाना चाहते हो, उधर अंह के अनुचित अधिकार के कारण तो है। अपनी ऐसी महा दुष्ट और अधम अवस्था को देखकर, दुखी होता हूं। जो काल मुझे ऐसा बना गया, उसके लिए पछताता हूं।"

श्रद्धेय श्रीमान जी की अति उच्च और सूक्ष्म, महान दृष्टि में वह मनुष्य पापाचारी न होकर भी अति दुष्ट रूप रखता है, जो अपने जीवन को प्रकृत रूप में देखने के अयोग्य है।

हम तो घोर अपराधियों और दोषियों को ही दुष्ट समझते हैं हमारी दृष्टि और सोच बहुत तुच्छ, स्थूल और मोटी है। श्रद्धेय श्रीमान जी के फरमान अनुसार सबसे बड़ी दुष्टता अंह का अधिकार है, क्योंकि अंह का अधिकार हमें अपनी नीचता देखने ही नहीं देता। हमारी अवस्था उससे भी कहीं भयानक है, जिसका श्रद्धेय श्रीमान जी ने ऊपर ज़िकर किया है।

काश! हम गुरू महाराज की देव ज्योति में अपना महा दुष्ट, अधोगति प्राप्त रूप बार बार देखने का यत्न करें और धर्म की सच्ची दुनियां में प्रवेश कर सकें।

(बलदेव सिंह)

कल्याण में विशेष सत्संग वा माता पिता दिवस

इस वर्ष निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक 17 फरवरी से 20 फरवरी 2012 तक कल्याण में देव समाज उत्सव एवं माता पिता संतान व्रत मनाया गया। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने स्थानीय सेवकों विशेषकर बलजीत सिंह जी, बूटा सिंह जी की सहायता से उत्सव में शामिल होने वाले धर्म सम्बन्धियों एवं श्रद्धावानों के ठहरने और खाने पीने की अति उत्तम व्यवस्था करा रखी थी। उनकी अपनी कोठी तथा स्कूल के कमरों में ठहरने का प्रयाप्त स्थान उपलब्ध था। 17 फरवरी को विशेष सम्मान के योग्य श्री मान बलदेव सिंह जी चार धर्म सम्बन्धियों सहित शाम तक कल्याण पहुंच गये थे।

इन दिनों इस पावन भूमि पर इस पावन उत्सव में पंजाब के विभिन्न गांवों व नगरों के अतिरिक्त अन्य राज्यों यथा राजस्थान, गुजरात हरियाणा, यू०पी० उत्तराखण्ड व हिमाचल प्रदेश से भी अनेकों 70-75 के करीब सौभाग्यवान जन शामिल हुए। एक एक समय सभाओं में उपस्थित जनों की संख्या 90-100 तक पहुंच गयी थी। प्रवेश सभा से लेकर अंतिम दिन की भाव प्रकाश की सभा तक देव प्रभाव दायक अतिशय लाभ दायक वातावरण बना रहा। सारी सभाएं एक से बढ़कर एक प्रभावशाली एवं दिलों को उभारने वाली साबित हुई जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

17.2.2012 शुक्रवार - प्रवेश सभा - संचालक श्रीमान बलदेव सिहं जी:-

इस सभा में माननीय सभापति जी ने विशेष तौर पर धर्म को परिभाषित करते हुए व्याख्यान दिया कि धर्म किसी विशेष प्रवृति अथवा विधि से किसी आराध्य की उपासना, स्तुति, आरती, वन्दना आदि करना, कोई अलग तरह की वेषभूषा धारण करना अथवा अन्य कोई कर्मकाण्ड करना कतई नहीं है। इसलिए हम देव समाजियों को सतर्क होने की आवश्यकता है कि हम देवात्मा को देवी देवताओं की तरह का इष्टदेव मानकर उनकी अराधना न करने लग जाएं। परम पूजनीय सतगुरू ने विशुद्ध परोपकार को धर्म की संज्ञा दी है। व्यवहारों में नेक बनने का नाम धर्म है अर्थात दूसरों का भला चाहने और करने बिना धर्म मार्ग पर चलने की कल्पना नहीं की जा सकती। मनुष्य सारी गतियां व क्रियाएं सम्बन्धों में ही करता है। इसलिए सम्बन्धों में पवित्रता व मधुरता लाने से ही स्वर्ग आ सकता है। देव प्रभाव क्या होते हैं, इस पर प्रकाश डाला गया। अर्थात, हृदय की मलीन, रोगी एवं अन्धकारग्रस्त अवस्था देव ज्योति ही दिखा सकती है जबकि देव तेज द्वारा ही अधोगतियों, नीच अनुरागों और विकृतियों से निजात मिल सकती है। यह केवल देव जीवनधारी देवात्मा द्वारा ही सम्भव है। देव समाज क्या है, इस की व्याख्या करते हुए श्री मान जी ने बताया कि देव समाज एक ऐसा वातावरण व मण्डल है जहां पर देव प्रभावों की वर्षा होती है और मनुष्य को नीच जीवन से मोक्ष व उच्च जीवन में विकास की सच्ची और व्यवहारिक विधियां बताकर धर्म की राह पर चलना सिखाया

जाता है।

शनिवार – 18.2.2012 पहली सभा प्रातः 9.00 बजे।

सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी

'अद्वितीय है रूप तुम्हारा' एवं "हृदय पे मेरे भगवन अधिकार हो तुम्हारा" भजनों की प्रस्तुति के बाद सभा संचालित करते हुए श्रीमान जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि एक एक चिन्ता व क्रिया से हम बनते व बिगड़ते है। देवात्मा कौन हैं, यह जानना तो बहुत कठिन ही नहीं बल्कि कल्पना से भी परे है, हमारे लिये तो श्रद्वेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को जानना तक कठिन है। महराज में उन्हें किसी ने पत्थर मारा। दर्द का इज़हार न करते हुए इस बात का दुःख व्यक्त किया कि पत्थर मारने वाला झेंप के कारण अब हमारे पास नहीं आएगा और हम उसका भला करने से वंचित हो जाएंगे। यह है महानता का लक्षण। काश! हमें कोई महान नज़र आए। महान व्यक्ति की महानता नज़र आने पर सिर झुक जाएं, और अपना आप तुच्छ नज़र आए। जब किसी की महानता नज़र आनी बन्द हो जाए तो रूहानी मौत है। फ्लोरेन्स नाईटिंगेल जो एक बहुत धनी परिवार की बेटी थी ने अविवाहित रह कर विश्व युद्ध के दौरान नर्स का पेशा अपना कर जो युद्ध में जख्मी सैनिकों की सेवा की उसका सारा विश्व साक्षी है। अस्पताल से जब वह गुजरती थी तो मरीज उसके साये को चूमते थे, और उनके जीवन के असरों से ही अपने आप को स्वस्थ लाभ करते हुए अनुभव करते थे। इसके अतिरिक्त इब्राहिम लिंकन द्वारा दास प्रथा का अन्त करके मानवता पर किये गये महान उपकार बताकर उनकी महानता का चित्रण किया। भक्त पूर्ण सिंह की माता ने उसे अविवाहित रह कर सेवा करने की प्रेरणा की। सेवा में सुख मिलने लगा और कोढ़ियों की सेवा करते हुए पिंगलवाड़ा की स्थापन कर दी। और भी कितने ही महान आत्माओं द्वारा परोपकार के कार्य किए जाने का जिक्र किया जिनमे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के दादा जी की लोगों के ऊंटों की बिमारी की सेवाएँ शामिल थी। श्रीमान जी ने कहा कि महान व्यक्तियों की याद से हमारी श्रद्धा बढ़ जाती है और हम जिन्दा हो जाते हैं।

18.2.2012 सायं 3 बजे :–

सभापति : श्रीमान जी डी०एस० चौहान

सभा में सभापति ने बताया कि मानसिक योग्यता का आत्मिक जीवन की होश से कोई लेना देना नहीं। विश्व में जो भृष्टाचार, दुराचार, अनैतिकता, रिश्वतखोरी, अपहरण वा कत्लोगारत हो रहा है, वह ज्यादातर पढ़े लिखे उच्च पदधारी व बड़े बड़े राजनेताओं द्वारा किया जा रहा है। उग्रवाद संगठनों को चलाने वाले बहुत कुशाग्र बुद्धि रखने वाले इन्सान ही हैं। इन्सान के रूप में यह सब शैतान किसी न किसी धर्म का भी अनुकरण करते हैं। वास्तव में गुनाहों की माफी की साधारण विधियां बताकर धर्मो ने नीच जीवन को बढ़ावा दिया। यदि परम पूजनीय भगवान देवात्मा की तरह आत्मा की सच्ची परिभाषा व उसके बनने और बिगड़ने की शिक्षा मनुष्य को मिली होती तो आज विश्व में सम्बन्धों में नरक न होता और नीच जीवन की जो भरमार है, मानवता उससे बहुत कुछ निजात पाए हुए होती।

18.2.2012 रात्रि, 8.00 बजे

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

इस सभा के आरम्भ में 'श्री देवगुरू भगवान ने हमें क्या से क्या है बना दिया' व वर्षा मेरे हृदय पे अमृत तेरे की होवे, का गान श्रीमान जगदीष जी व श्रीमान चन्द्रगुप्त जी ने किया।

सभा संचालन करते हुए श्रीमान जी ने वर्णन किया कि साधु-सन्यासी दुनियादारी को घटिया समझते हैं। सम्बन्धों को गौण व मिथ्या समझते हैं, जबकि सम्बन्ध ही यथार्थ है, यह हकीकत है, उनसे आंखे बन्द नहीं की जा सकती। वास्तविक धर्म ही सम्बन्धों में है। सम्बन्धों में उच्च व्यवहारों का नाम ही धर्म है। निर्भर करता हैं कि सम्बन्धों का आधार क्या है। विश्व के अन्दर 99% स्वार्थ है और जीवन भी बर्बादी स्वार्थ में है। पूर्ण स्वार्थी मनुष्य पूर्णत: समाप्त होने को है। स्वयं को कायम रखने के लिए निस्वार्थ जीवन ही आधार है।

श्रद्धा का पात्र परोपकारी वह भी विशुद्ध परोपकारी ही हो सकता है। जहां स्वार्थ है वहां नरक ढूंढने की जरूरत नहीं है। मनुष्य का सारा चिन्तन, मनन व क्रियाएं सम्बन्धों में ही होती है। ये सम्बन्ध केवल मनुष्यों में ही व मनुष्यों के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के चारों ही जगतों अर्थात भौतिक, वनस्पति व पशु जगत के सम्बन्ध में भी उतने ही महत्वपूर्ण व आधारभूत हैं। सम्बन्धों में जितनी प्रगाढ़ता, एकरूपता व सुन्दरता होगी जीवन उतना ही सरस व सफल होगा। सम्बन्धों में बिखराव, कटुता व नीरसता मुर्दा लाशों के समान जीवन है। यदि मुझे गुरू का दर न मिला होता तो मैं निज के सम्बन्धों में बहुत नुकसान उठाता परन्तु अब बरकतों का ब्यान नहीं होता। उच्च भावों की Value गुरू सिखाते हैं। गुरू दर से पाई नियामतों ने शहनशाह बना दिया। मैं कामना करता हूं कि आप सब का जीवन पहले से कहीं बेहतर हो।

<u>दिनांक 19 – 2 – 2012, रविवार</u>

पहली सभा - प्रात 9.00 बजे

सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी

"बचाना मरती रूहों को मिशन अपना बनाया है" "तथा तुम बिन कौन मोहे बचावन हार" नामी भजनों के गान के उपरान्त श्रीमान जी ने इस सभा का शुभारम्भ करते हुए, वर्णन किया कि हमारे पुरातन गुरूओं, पैगम्बरों एवं ऋषि-मुनियों ने मनुष्यों का बहुत भला किया है। औधौगिक क्रांति एवं यांत्रिकी का उस समय न ज्ञान था तथा न ही कोई विकास था। आधुनिक काल में हर क्षेत्र में कल्पनातीत विकास हुआ है। नित्य नई खोजों व अविष्कारों से युग परिवर्तन हो गया है। देवात्मा ने जो युग पलटाऊ बातें की हैं, उनका दूसरों को तो क्या हमें भी पता नहीं चल पाया। सब मनुष्य अन्धेरे में हैं, जीवन मार्ग से अनभिज्ञ हैं। नेक बनने का नाम ही धर्म है। भले बुरे हम सम्बन्धों में ही बनते हैं। इनसान भले भावों से भला बन जाता है व नीच भावों की वृद्धि से बुरा बन जाता है। हानिकारक जीवन को छोड़ कर परोपकार करना धर्म जीवन है। प्रचारक बनने से धर्मवान नहीं बना जा सकता, मनुष्य धतूरे के पेड़ की तरह है। यहां आकर मात्र कुछ हद तक धतूरे के पत्ते ही झड़े हैं। जितना जीवन हम दूसरों के लिये जीते हैं हम उतना ही धर्मवान हैं। जब कोई अपने से बेहतर

नजर आए, स्थायी तौर पर दूसरों की बड़ाई देखने की आंख हो व दूसरों से पाई गई सेवाएं व उपकार कर्ज की न्यांई नज़र आएं और प्रति उपकार कर सकें तो कुछ धर्म जगत में अपना प्रवेश अनुभव कर सकते हैं। घरों में स्वर्ग उपकार स्मरण से ही आ सकता है। सभापति जी ने स्वयं के बारे में बताया कि भगवान देवात्मा ने जंगली आदमी को क्या से क्या बना दिया।

19 – 2 – 2012 :

सभापति: श्रीमान राधेश्याम जी शर्मा

आशीर्वाद प्रार्थना के उपरान्त सभापति जी ने बताया कि श्रद्धा सूत्र से ही कुछ उपलब्धि हो सकती है। गुरू महाराज को समझने से पहले नेचर को एवं विकास कारी नियम को समझना बहुत जरूरी है। इस विशालकाय नेचर में सबसे पहले भौतिक जगत की उत्पत्ति हुई। पृथ्वी व जल की उत्पत्ति के बारे वैज्ञानिक सत्यों के बारे हम सब जानते हैं। सर्व प्रथम जीवाणु से घीरे-2 उद्भिद जगत व पशुजगत का विकास हुआ। इसी पशु जगत से मनुष्य का विकास हुआ। मनुष्य के स्तर तक पहुंचने में जीवाणु को लाखों करोड़ो जातियों प्रजातियों से गुजरना पड़ा। इसी क्रम को 84 लाख योनियों का नाम दिया गया। यद्यपि नेचर के विकास क्रम में उन्नतशील मानसिक शक्तियों के कारण मनुष्य पशुजगत से अलग हो गया तथापि सुख अनुरागी प्रकृति के कारण उसके भीतर स्वार्थवश विभिन्न प्रकार के नीच भाव पैदा हो गए। विश्व में जो विनाश लीला का ताण्डव हो रहा है यह भी उसकी मानसिक शाक्तियों के कारण ही हो रहा है। हालांकि दया का भाव मनुष्य के भीतर विकास क्रम में ही विकसित हुआ परन्तु इसका स्तर सात्विक भाव तक ही सीमित है और यह आध्यत्मिक स्तर नहीं है। क्योंकि सात्विक जीवन धारी भी अनेक पहलुओं में वहीं खड़े हैं। यह केवल देवात्मा की ही समर्थ्य है कि वे अधिकारी जनों को बदल देते हैं। कितने ही अनगिणत आत्माओं को देवात्मा ने अपने देव प्रभावों से बदल कर कहीं से कहीं पहुंचा दिया। सरदार सावन सिंह जी एवं कँवर दवेन्द्र सिंह जी के जीवनों का संक्षिप्त उदाहरणें देकर सभापति जी ने इस अधिकार तत्त्व की पुष्टि की।

19 फरवरी 2012 :

सभापति: श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

भजन : देते हैं धन्यवाद तुम्हें मेरे दिल के सारे उदगार- - -।

हर सभा में गुरू महाराज के देव प्रभावों की वर्षा होती रही इसलिए इनमें शामिल होने वाले महा सौभाग्यवान हैं। देव प्रभाव मिलने पर हमें अपनी अवस्था ज्ञात होकर दीनता आती है। हम विकारों से भरे पड़े हैं। बात सच्ची है परन्तु हमारे ऊपर से निकल जाती है। औरों के दोष-विकार तो हम बखान कर लेते हैं, अपने न ब्यान करते हैं और न ही स्वीकार करते हैं। हम सुखों के आशिक हैं, मरीज हैं व गुलाम हैं। ब्रिटनी हुस्टन विश्व प्रसिद्ध गायिका बीस विकारों से ग्रस्त थी (जिसने आत्म हत्या कर ली) सब की दौड़ सुखों की ओर है, चाहे वह आम इन्सान है या संत हैं होश लाने वाला दर और है। जिस तरह मक्खी का गन्दगी पर गिरना लाजमी है, वैसे ही सुख अनुरागी का पतन भी अवश्यमभावी है। सुख का प्रेम हमें किसी का नहीं

बनने देता। नीच सुख इनसान की बहुत बुरी हालत कर रहे हैं।

गुरू का यह दर जीवन की होश का आबे हयात है। इस दर के मिलने से पहले सभापति जी ने अपने नीच जीवन का वर्णन अश्रु बहाते हुए किया और इस दर पर आने के बाद मिली बरकतों का वर्णन कुल सम्बन्धयों में आई पवित्रता से किया। यह सब कुछ देव प्रभाव पाने से ही सम्भव हुआ। इसलिए कामना है कि इस दर से कोई खाली न जाए क्योंकि जीवन का सच्चा बचाव इसी दर पर है। सभा के अन्त में श्रीमान मेहर सिंह जी ने प्रकाश किया कि सूअर स्वर्ग में नहीं जाना चाहता क्योंकि वह गन्दा नाला नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं अपनी पत्नी से बढ़कर किसी को बुरा न मानता था। अब पत्नी सबसे बेहतर जान पड़ती है, बेटे अच्छे लगते हैं। गुरू का दर प्यारा लगता है, धर्म सम्बन्धी वास्तविक सम्बन्धी नजर आते है, मेरे से बढ़कर सौभाग्यवान कोई क्या होगा।

<u>20 फरवरी 2012 सोमवार प्रात</u>

(माता-पिता संतान व्रत साधन)

सभापति : श्री बलदेव सिंह जी

परमपूजनीय भगवान देवात्मा के श्री चरणों में सहाय प्रार्थना करते हुए सभापति जी ने फरमाया कि देवात्मा विकास क्रम की उच्चतम देन है। मनुष्य हानिकारक जीव है, देवात्मा के देव प्रभाव इसे हितकर जीव बनाते हैं। काश! हमें अपना रूप नज़र आ सके। "श्रद्धा भाजन माता-पिता जी श्रद्धा भाव करूं उपहार" भजन के गान के साथ सभा संचालन करते हुए श्रीमान जी ने बताया कि धर्मो वालों का प्रयास सदियों से यही रहा है कि लोगों का ध्यान ईश्वर व देवी-देवताओं की ओर जाए। इसमें आने वाली रुकावटों को झाड़ते जाओ। वेदान्त मत ने मानवीय सम्बन्धों को बड़ी रुकावट बताते हुए व सम्बन्धों को गौण व असार कहते हुए इनसे विच्छेद की बात की। एक एक सत्य को स्थापित करने में सदियां लगी। पृथ्वी सूर्य के गिर्द धूमती है यही सत्य बहुत देर बाद साबित हुआ। देवात्मा के जानने में भी सदियां लगेंगी। अभी तक दुनिया ने देवी-देवताओं की ओर देखा है, अपने आप को व सम्बन्धों को देखा ही नहीं। सम्बन्धों के बगैर धर्म भी नहीं है। माता-पिता का सम्बन्ध सबसे पवित्र व प्रगाढ़ सम्बन्ध है उन्हीं के कारण हमारी हस्ती है, वे हमारे लिए क्या कर गुजरते हैं हमें पता ही नहीं चलता। फिर नाशुकरा इनसान कहता है, हमारे लिए किया ही क्या है। इब्राहीम लिंकन ने कहा था कि जो कुछ भी मैं हूं, उस का सारा श्रेय मेरी मां को जाता है। संसार के समस्त लोग वह कुछ नहीं कर सकते जो मां बाप करते हैं। एक एक बात में जान न्योछावर करते हैं मां-बाप! बच्चों की परवरिश बिना किसी शर्त वा स्वार्थ के करते हैं। अनेकों उदाहरण ऐसे दिये जहां माता-पिता के प्रति बेरूखी व उपकारी रूप नज़र नहीं आता था, परन्तु देवात्मा के दर से जुड़ने पर वही सन्तानें सेवाकारी व श्रद्धावान बनी और स्वर्गिय दृश्य पैदा हुए। श्रीमान जी ने अपनी माता का उपकारी रूप वर्णन किया। रूस की एक लड़की परासका का अपने पिता को कैद से छुड़ाने के संग्राम का वर्णन दिलों को प्रभावित करने वाला था।

सभा के इस अवसर पर उपस्थित माता-पिता व संतान ने एक दूसरे को फूलों के हार पहना कर इस सम्बन्ध के महत्त्व का सुन्दर परिचय दिया।

भाव प्रकाश

<u>बेनी प्रसाद जी शर्मा:</u> - श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान को इधर सत्संग में लाने के लिए धन्यवाद देता हूं, इधर आकर माता पिता सम्बन्धी यज्ञ में शामिल होने का अवसर मिला। मेरे पिता जी का देहान्त छोटी उमर में ही हो गया। मां बड़े भाई के पास रहती थी, वह गांव से हमारे पास आ गई, वह वापिस गांव जाना चाहती थी, माता जी को मैं वापिस छोड़ने के लिए गया, बड़ी मुश्किल आई, तंग आ गया, खीझता रहा अब देव समाज में आकर मां का रूप और उपकार नज़र आते हैं। माता जी यात्रियों की बहुत सेवा करती, एक बार एक बाल्टी पानी की रख देने पर बड़ी आशीषें देती नहीं थकती। यहां आकर बड़ा लाभ हुआ है। पहली सभा में ही भगवान के देव रूप की जो महिमा गाई थी, उसे सुनकर हृदय गद्‌गद् हो गया। देव समाज असल में क्या है, देव प्रभावों का कारज है, इसको जिस तरह समझाया गया, उससे बड़ा लाभ हुआ, धर्म क्या है, इसको जिस तरह समझाया गया, उससे बड़ा लाभ हुआ, धर्म सिंह जी ने मुझे मिथ्या और पापों से बचाया है, वह मुझे कहते हैं मैं आपका बेटा हूं, उन्होंने मेरी बेहद सेवा की है। मेरा बेटा भी अब अपनी मां को प्रणाम करने लग गया है। मेरे सारे ही परिवार का बेहद भला हुआ है। लड़के की मौत के बाद मुझे जो धर्म सम्बन्धियों ने सहारा दिया, उसका ब्यान नहीं हो सकता। मेरे बेटे को इन्होंने ने ही सन्मान करने लगाया है।

<u>श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :</u> - आप सबके इतनी दूर दूर से कष्ट उठाकर इधर पधारने के लिए तहदिल से धन्यवाद देता हूं। आप लोगों की सेवा में जो कमियां रह गई हैं, उनके लिए क्षमा मांग रहा हूं। गुरू दर पर आने से पहले मेरी आंखों पर मोतिया बिन्द उतरा हुआ था। मां बाप का अनादर करता रहा और डांट डपट करता रहा। मां रोती रहीं कि भेड़िया रोने भी नहीं देता।

गुरू कृपा से मुझे माता पिता का सुन्दर रूप नज़र आया है। उनका सारा तप नज़र आया है। इसको करके उन्होंने हमें पाला है। उनके हाथों के दस्ताने घिस जाते, पोहली के कांटों से हाथों से लहू बहता रहा, वह खुद सादा रहे, मगर हमारे लिए किसी किस्म की कोई कसर रु० पैसे की, सुख आराम पहुंचाने की कोई कमी नहीं रहने दी। मैं दुखी हूं कि मैने उनकी नेक कमाई बर्बाद की। शराबी, कबाबी और गुस्ताख़ बेटा बन गया। एक बार शराब पीकर सारी रात बेहोश रहा। उस दिन मुझे मरने से बचाया। इस तरह दो बार मौत से मेरे पर निछावर होकर मुझे बचाया। जिस प्रकार के दुख दिए, वह रह रहकर याद आ रहे हैं। मेरी आंख में से कन निकालकर मेरी आंख को बचाया। मुझे मिरगी के रोग से बचाने के लिए जो कुर्बानियां की उसका ब्यान नहीं हो सकता। मेरे पिता जी ने लोगों की मजदूरी करके, डाक्टरों के घर नौकरों की तरह काम करके भाई का ईलाज करवाया, जान की बाजी लगा दी। हमने दुख, दर्द और अपमानों के बिना उनको कुछ नहीं दिया। सत्गुरू ने कुछ मोतिया दूर कर दिया। पिता जी का महान और ऋषि रूप दिखाया है। पिता जी ने मेरे दादा जी की भरपूर सेवा की है, न नींद याद रही, न फसल खेत याद रहे, मगर अपने पिता की सेवा में रत रहे, छोटी सी उमर में ही अपने पिता को हल

चलाना छुड़वा दिया। ऐसे दयावान का मैंने अनादर किया है। पिता जी ने मेरी नानी की बेहद सेवा वा सत्कार किया है। ऐसे सत्गुरू की रोशनी में मुझे उनके अनादर और अपमान करने के लिए शर्म ही शर्म आती है। ऐसी कामना करता हूं कि मेरे पिता जी जितनी देर जिन्दा रहें, उनकी सच्ची सेवा और सत्कार हो सके। इसमें जो कमियां हैं वह दूर कर सकूं। इस सत्संग के प्रभावों को सफल कर सकूं।

जगजीत सिंह जी लुधियाना :- माता पिता, दादा दादी, नाना नानी को हररोज़ याद करता हूं, उनकी फोटोज़ को नमन करता हूं। मेरे पिता जी कभी नम्रता नहीं छोड़ते थे। उनके अन्दर यह कभी घमंड नहीं आया कि अब हम लाखों में खेलते हैं। दादी जी को चोट लगी। छः महीने बिस्तर पर रहीं और आख़िर मर गई, मुझे दुख हो रहा है कि मैं उनकी कोई सेवा न कर सका। दादा जी की एक साल मेरे भाईयों ने सेवा की जो बहुत सराहनिय है। मां को आख़री वक्त गुलूकोज़ घोल कर पिलाया, मां ने हाथ पकड़ कर बहुत प्यार दिया, वह याद कभी नहीं भूलेगी। शाम को चार बजे जब मैं पास नहीं था, वह चली गई। अब सब भाईयों ने मिलकर यह फैसला किया है कि माता पिता की जायदाद से एक सांझा फंड बनाया है, साल में उनको याद करके माता पिता दिवस मनाया जाएगा। सुबह चारों जगतों को याद करके नमन करता हूं। जब फोन और लैपटाप से लड़की और उसके परिवार से बातें करता हूं, तो सांईसदानों के आगे झुकने लगता हूं।

धर्म सिंह जी चौहान :- मैं जब छोटा सा था, तो खेत में मूंगफली बहुत होती थी, खेत में रखवाली करते थे, पिता जी ने हिसाब किताब में कमी देखी और उसकी पड़ताल करने चले गए, रात को मुझ अकेले को छोड़ गए, जबकि वहां शेर भी आ सकते थे, इस पर मां पिता जी से बहुत लड़ी। मैंने पिता जी को सवाल किया कि आप पढ़े क्यों नहीं तो पिता जी ने बताया कि मेरे पिता जल्दी मर गए और रोने लगे, जो कभी नही रोते थे, भुआ पिता जी को अपने साथ ले गई, वहां उन्हें भैंसे चराने में लगा दिया। मेरे पिता जी के अन्दर यह ज़ोरदार इच्छा थी कि मैंने अपने बच्चों को पढ़ाना है। हमाारी 250 बीघा ज़मीन रहन पड़ी थी, पिता जी आदि दोनों भाईयों ने बेहद मेहनत करके उस ज़मीन को छुड़ाया। मेरे पिता जी ने हम छः भाईयों को पढ़ाया, एक भाई विक्रम खुद नहीं पढ़ा, वह मास्टरों से डरता रहा। ट्रेक्टर लेने की बात हुई, मैंने पिता जी को बोला कि जमीन पर कर्ज़ा ले लें, पिता जी कर्ज़ा के सख़्त खिलाफ थे, वह नहीं माने, मैं पिता जी को बुरी तरह बोला कि ज़मीन साथ ले जाओगे। मैं एम.ए. पास करके भी कभी पिता जी को प्रणाम नहीं करता था। एक बार तय करके गया कि आज प्रणाम करूंगा, पर नहीं कर सका। साधारण नमस्ते तक नहीं की। दूसरी बार कोशिश की, तीसरी बार कोशिश करके मां को प्यार किया और प्रणाम किया। पिता जी को फिर भी प्रणाम नहीं किया। चौथी बार बड़ी मुश्किल से बहुत धीमा सा प्रणाम कहा। कोई गोली नहीं लगती थी, परन्तु जहालत ही इतनी अधिक थी कि प्रणाम करना मुश्किल लगता था। अब लानत आती है कि पिता जी की जो सेवा करनी चाहिए थी, बिल्कुल नहीं की।

बचपन में मेरी स्कूल की तख़्ती टूट गई, पिता जी ने उसे मुरम्मत करवा दिया, मां ने चोरी सरसों दी और मुझे नई तख़्ती दिलवाई। छ- बहुओं के साथ

मां मेल से रही, आम इतनी बहुएं पागल कर देती हैं। मां ने सबके साथ अच्छी निभाई और प्यार से रहीं। मेरी पुत्रवधु ने आकर मेरे माता पिता जी के छोटे size के फोटो खुद बड़े size के करवाए, ऐसा अब कोई दिन नहीं जाता, जब मैं माता पिता को सुबह प्रणाम नहीं करता।

प्रिंसीपल मिसिज सुरजीत बराड़ : - मेरे माता पिता विशेष थे, उन्होंने फार्म पर बेहद संग्राम किया, उन्होंने हमारी पढाई के लिए बहुत कुर्बानी की है। मां ने अपनी बालियां बेच दी, मेरी फीस दी, क्योंकि मेरी पढ़ाई बन्द कर रहे थे, यदि वह आगे न आती तो मैं अनपढ़ रह जाती। पिता जी ने दुबारा फेरूशहर में स्कूल जारी करवा दिया, बहुत सा रू० इकट्ठा करके पब्लिक स्कूल बना दिया। सारा संग्राम एक माह में किया। पिता जी के भीतर गुरू दर के लिए गहरी लगन थी। अवतार सिंह बराड़ मोगा को पापों में बहते हुए बचाया। अनेकों अधिकारी जनों को गुरू दर से जोड़ा। जो कुछ मैं आज हूं सब उनकी कृपा से है। धन्यवाद के साथ उनका आशीर्वाद मिलता रहे, हमारे बच्चे भी समाज से जुड़ सकें।

प्रिंसीपल डा० सतिन्द्र ढिल्लों : - मेरा सब कुछ माता पिता की देन है। मुझे सब बहन भाईयों से ज्यादा प्यार और सेवा मिली, मुझे कई बार मौत से बचाया और दूसरा जन्म दिया। बेजी ने फार्म पर बेहद मेहनत और संग्राम किया। वह ट्रेक्टर की खराबी को दूर से बता देती थी। मुझे बेहद निछावर होकर पढ़ाया। पिता जी के सरिया लगने से सिर पर चोट लगी, मगर वह उसी प्रकार सिर बांधकर समाज का काम करते रहे। दादी जी और भुआ जी भी बहुत याद आते रहे। मां की आंखें दान करवाई। माता पिता जी का नौकरों से बहुत प्यार का सम्बन्ध था। सभाओं से बेहद लाभ हुआ है। बहुत प्रभावदायक सभाएं थी। मैं आगे से भी यहां आते रहने की कोशिश करूंगी।

श्रीमान मधू सूदन जी : - सभाओं में अपनी तरफ ध्यान जाता रहा है। उच्च वलवले पैदा होते हैं। यहां आकर अपने अध्यापकों के उपकार नज़र आए हैं। वह चार बजे उठाकर पढ़ाते थे। उनकी वजह से ज़िन्दगी में बहुत कुछ लाभ हुआ है। मेरे चचेरे भाई ने मां की बहुत सेवा की है। मैं यह सेवा न कर पाने के लिए जारो कतार रोता हूं। चचेरा भाई और उसकी पत्नी दोनों ने बहुत सेवा की है। धर्म सम्बन्धियों से मिलकर खुशी मिलती है।

बीबी शीला जी भंटिडा : - कल की सभा से बहुत लाभ हुआ। कर्ज़ा और सेवा नज़र आई। मां ने सिलाई कर करके पढ़ाया है। स्कूल में आकर मुझे गर्म रोटी खिलाती। माता पिता बहुत याद आ रहे हैं। उन्होंने बेहद कष्ट सहे हैं, उनका बदला दिया नहीं जा सकता। भाई पढ़कर चण्डीगढ़ चले गए। भाई ने मेरा फिकर किया और आगे पढ़ाया। मां ने दरियां बनाकर खेस बुन बुनकर और सिलाई करके हमें पढ़ाया और पालना की। मां ने अपनी बालियां बेचकर भाई को पढ़ाया वह भाई ने बाद में अपनी कमाई से बनाकर दी। मुझे सेविका बनाया। मां बिमार हो गई। 15 दिन मैंने रात दिन न सोकर सेवा की। डाक्टर ने दवा दी मां ठीक हो गई। मेरी नींद चली गई। सोने की दवाई देनी पड़ी। मेरी मां ने मेरे बच्चे की पैदायश पर बहुत सेवा की 10 - 15 दिन अपना आप भूलकर सेवा की। मेरी बहन की मौत का मां को बहुत सदमा लगा।

श्रीमान कुलदीप सिंह जी : - एक सभा में प्रभावित होकर ब्यान किया। उन्होंने अपनी पत्नी की सख्त बिमारी में बहुत बड़ी आर्थिक सहायता करने वाले सब जनों को याद कर कर गहरे भावों से भरकर धन्यवाद दिया, अपनी दोनों बहनों के बार बार आकर मुसीबत के दिन कटाने को याद करके आंसुओं से भरी आंखों के साथ धन्यवाद दिया। लेडी डाक्टरों, नर्सों और डाक्टर साहिबान के मेहरबानी भरे स्लूकों वा सेवाओं को याद कर करके उनके चरणों में झुक कर धन्यवाद देते रहे। उनकी बेटी और दामाद ने भी अपना घर छोड़ छोड़कर जो सेवा सहायता की, उसको भी बहुत गहराई से महसूस किया उनका ब्यान दिलों को छूने वाला था और गुरू महाराज के प्रति हृदयोंको झुकाने वाला था।

समय बहुत हो जाने पर सभापति जी ने सौभाग्यवान हाज़िर सन्तान को अपने श्रद्धेय माता पिता का फूल मालाओं से अर्चन करके उनके पावों में सिर रखकर प्रणाम का साधन करने के लिए प्रेरित किया। तीस चालीस सन्तानों ने यह साधन करके पाक खुशीयां प्राप्त की। यह दृष्य अत्यन्त स्वर्गिय था। हाजरीन ने 12/13000 रू० लंगर की सेवा के लिए दिया। चार बार जय ध्वनि के साथ, यह बहुत हितकर सत्संग सम्पन्न हुआ। हाजरीन को एक दिन धर्म सिंह जी चौहान की तरफ से उनके पोते के जन्म की खुशी में गाजर का हलवा खिलाया गया। आखरी भोज भी मिष्ठान के साथ परोसा गया।

पिता की भूल

सुनो बेटे। मैं तुमसे कह रहा हूं जब कि तुम पड़े हो, एक नन्हा सा हाथ अपने गाल के नीचे रखे हुए और अकेला ही तुम्हारे कमरे में चला आया हूं। कुछ मिनट रहा था पहले ही जब मैं अपने पुस्तकालय में अपने पेपर को पढ़ रहा था। एक पश्चाताप की लहर सी मेरे भीतर उठी। अपराधी सा मैं तुम्हारे पास चला आया।

मैं ये बातें सोच रहा था, बेटे! मैं तुम पर बिगड़ा था। मैंने तुम्हें डांटा जब तुम स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहे थे क्योंकि तुमने तौलिए से केवल मुह ही पोंछा। मैंने जूते साफ न करने के लिये तुम्हारी मुरम्मत की। मैं क्रोध में चिल्लाया जब तुमने कुछ अपनी वस्तुएं फर्श पर पटकीं।

नाशते के समय भी मैं नुक्स निकालता रहा। तुमने चीजें गिराई। तुमने खाना जल्दी से निगला। तुम मेज़ पर कुहनियां रख कर बैठे हो। तुम ब्रैड पर मक्खन की बहुत मोटी परत लगाते हो और जब तुम खेलने के लिए जाने लगे, तुम मुड़े और हाथ हिला कर बोले "Good bye Daddy" और मैं त्योरी चढ़ा कर बोला " अपने कंधों को सीधा रखो।"

यह सब दोपहर बाद फिर शुरू हो गया। जब मैं सड़क पर आया तो तुम्हें अपने घुटनों के बल कांचों से खेलते हुए देखकर चिढ़ गया। तुम्हारी जुराबों में सुराख थें मैंने तुम्हें तुम्हारे दोस्तों के सामने अपने आगे आगे घर की ओर लाकर शर्मिन्दा किया और कहा - जुराबें मंहगी हैं - अगर तुम्हें खरीदनी पड़े तो तुम अधिक

बाकी का पृष्ट 20 पर

श्राद्ध की सभा

जैसे पहले सूचित किया जा चुका है, श्रीमती चन्द कौर जी धर्म पत्नी स० मेजर सिंह जी ढिल्लों D.S.P Retd गांव जवाहरे वाला (मुक्त सर) निवासी, जो श्रीमती बचिन्त कौर जी सन्धू मोगा निवासी की बड़ी बहन जी थे) का देहान्त 23 फरवरी 2012 को हो गया था। उनकी अपनी शुभ इच्छा अनुसार उनका दाह संस्कार चण्डीगढ़ में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाया।

उनके सम्बन्ध में श्राद्ध का साधन 2 मार्च 12.30 बजे उनके सपुत्र स० रजिन्द्र सिंह जी ढिल्लों के घर 346 Phase 11 मोहाली में करवाया गया। इस सभा के सभापति भी श्रीमान बलदेव सिंह जी थे।

इस सभा के लिए देह त्यागी जी के सुपुत्र बेटीयां और उनके सारे परिवार और रिश्तेदार और लोकल रिश्तेदार, धर्म सम्बन्धी अच्छी संख्या में पहुंच गए थे।

सबसे पहले वैराग्य विषयक भजनों का गान किया गया। जो जगदीष जी ने गाए। फिर गुरू महाराज की छवि पर सुन्दर फूलों का हार डालकर सबने प्रणाम किया। फिर देह त्यागी जो की फोटो और स० मेजर सिंह जी की फोटो पर हार डालकर सन्मान दिया गया। फिर हाजरीन ने बारी बारी फूल रखकर अपना सन्मान प्रदर्शित किया।

फिर सभा के आरम्भ में सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देह त्यागी जी की भावना की बहुत प्रशंसा की और सन्मान व्यक्त किया जिन्होंने श्राद्ध करवाने की इच्छा प्रगट की। उनके सपुत्र को भी धन्यवाद दिया, जिन्होंने माता की शुभ इच्छा को पूरा किया।

सभापति जी ने पहले देव समाज के बारे में वर्णन किया कि देव समाज एक समाजिक और धार्मिक क्रान्ति है और देव समाज ने उनका कई पक्षों में बड़ा भला किया है। चन्दकौर जी के माता पिता सारी उमर देव समाज के सेवक रहे हैं, श्रीमान पंडित नेतराम जी का उनके मायके परिवार से गहरा सम्बन्ध था। देह त्यागी वा उनकी बहन जी को फेरूशहर में पढ़ाई देव समाज स्कूल में करवाने के लिए उन्होंने बहुत सहायता की। फिरोजपुर, मोगा आदि में उन्होंने शिक्षा पाई वह एक कुशल, मेहनती रिटायरड सरकारी अध्यापिका थी। 90 साल पहले लड़कियों की शिक्षा देव समाज की कृपा के बिना नहीं हो सकती थी।

सभापति जी ने परलोक सम्बन्धी देव समाज की विज्ञान मूलक शिक्षा का बहुत संक्षेप और सुन्दर ढंग से ब्यान किया। बताया कि आत्मा का निर्माण कैसे होता है, उसका भला बुरा, उसका लक्ष्य क्या है? मरकर इन्सान कहां जाता है? परलोक की तैय्यारी के विषय में बताया गया। हाजरीन ने पूरी दिलचस्पी से सुना।

परम पू० भगवान के कारज के विषय में बताया गया, जिसकी अभी कदर नहीं जागी। फिर देह त्यागी जी के गुणों के विषय में बताया गया कि वह बहुत नेक प्रकृति रखती थी, किसी से झगड़ा नहीं करने वाली थी। अपने सुसराल में बहुत मेल से रहीं। वह अपने बच्चों और उनके बच्चों को बहुत प्यार करती थी। नीयत दान वा अख़बार चन्दा देने का हमेशा फिकर रखती और उन्हें दिलचस्पी से पढ़ती। देव समाज के कर्मचारियों का हमेशा सन्मान करती थी। अपने बहन भाईयों से बहुत प्यार भरा

सम्बन्ध था।

उनकी छोटी बेटी सतवन्त गिल ने रो रोकर उनकी मेहरबानियों का ब्यान किया। उनके दामाद सरल गिल ने भी भरे दिल से उनके गुण बताकर श्रद्धांजली दी।

समय काफी हो गया था। 2 बजे के करीब शुभ कामना सम्बन्धी भजन का गान किया। सभापति जी ने हृदय गत भावों से देह त्याागी की आत्मा के भले वा शान्ति के लिए शुभ कामना की।

परिवार की ओर से 2100 रू० दान में दिए गए। चार बार जय ध्वनि करके यह हितकर सभा समाप्त की गई। उसके बाद हाजरीन को लंच करवाया गया।

(एक हाजरीन)

भाई बहनों के सम्बन्ध में सभा

चण्डीगढ़ में ईतवार के साधन के लिए सभा स्थान को साफ किया गया। अर्चन के लिए सुन्दर फूल रखे गए। हाज़र जन सब ग्रैजूएट, पोस्ट ग्रैजूएट वा Ph.D थे। (केवल एक सेवक को छोड़कर) पहले श्रीमान जगदीष प्रसाद जी ने "जीवन ज्योति के तुम सूरज" नामक भजन का बहुत सुन्दर भावों से गान किया, फिर देव स्तोत्र का गान वा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भाव विभोर होकर व्याख्या की। फिर गहरे भावों से गुरू के दरबार में सहाय प्रार्थना की।

इसके बाद पू० भगवान की कृपा का मुक्त कंठ से ब्यान किया, किस प्रकार हम पशुवत वा जंगली मनुष्यों का उद्धार किया है। फिर सम्बन्ध तत्व की शिक्षा देकर हमारा कैसे कल्याण किया है, इसका ब्यान किया, फिर बताया कि कैसे नीच भाव इस सम्बन्ध में नर्क पैदा करते हैं। इसके उदाहरण दिए। फिर उच्च भाव धारी बहन भाईयों को दिल को छूने वाली घटनाएं बताई। फिर सभापति जी ने अपनी माता समान बड़ी बहन के गुण और उपकार वर्णन किए। अपने भाई के उपकार वर्णन किए। उन्हें बार बार धन्यवाद देते रहे। फिर उच्च लोक वासी श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी, श्रीमान रूपचन्द जी, श्रीमती सत्यवती जी का अपने बहन भाईयों के प्रति सुन्दर व्यवहार पेश किया। डा० सतिन्द्र ढिल्लों, डा० शशी जी खेड़ा, श्रीमान जगदीष जी ने प्रभावित होकर अपने भावों को प्रकाश किया, जगदीष जी ने अगले ऐतवार इसी विषय पर अपने घर में सभा रखने की बेनती की। सतिन्दर ढिल्लों ने अपने बहन भाईयों के उपकार बहते आंसुओं से ब्यान किए। बड़ा ही स्वर्गिय वातावरण बना।

श्रीमान मधूसूदन जी ने अपने चचेरे भाई और उसकी पत्नी के उपकारों का वर्णन किया। जो सेवा वह गांव में अपनी मां की नहीं कर सके, वह इन्होंने की। उनका ब्यान कृतज्ञता को दर्शा रहा था। शशी जी ने फोन द्वारा कई जनों को इस प्रभावशाली वातावरण के विषय में बताया।

सब पू० भगवान के चरणों में झुक रहे थे और धन्य धन्य हो रहे थे। चार बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त हुई।

शुभ संग्राम

मानसा : 3 मार्च 2012 को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से मानसा पहुंचे। डा० सुबोध कुमार जी और उनके परिवार को मिले। डाक्टर काकू जी, उनकी बहन और उनके पति को भी मिले। उनके परिवारों को सभा रखने की प्रेरणा की। वह भी संगत रखने के चाहवान थे।

मल्लेका : - शाम को श्रीमान जी मल्लेका पहुंच गए और रात को एक सभा रखी गई। "हमारे पू० सत्गुरू जी, तुम हो धन्य" नामक भजन गाया गया और डाक्टर हरनाम सिंह जी जिन्होंने यह भजन बनाया और गाया था, उस विषय में बताया गया। भजन की व्याख्या की गई। गुरू महाराज के कारज की महिमा बताई गई। सबने बहुत उत्साह अनुभव किया, अगले दिन फिर सभा रखी गई।

4.3.2012 सुबह 9 बजे : - सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस सभा में बताया देव समाज सांईस के नये अविष्कारों की तरह एक नया अविष्कार है। गुरू महाराज ने धर्म को नये अर्थ दिए हैं। पूजा, पाठ नमाज आदि को छोड़कर अच्छे बनने का नाम धर्म बताया है। अच्छे बुराईयों को छोड़कर और अच्छे भाव पैदा करके बना जा सकता है। श्रद्धा, सम्मान वा शुक्रगुजारी के बिना धर्म नहीं होता। गुरू महाराज ने यह भाव पैदा करके अच्छे इन्सान बनाए हैं। विस्तार से इसका ब्यान किया गया। इस सभा के दौरान श्रीमान बलबहादुर जी भी आ गए थे।

8 बजे रात :- सभा में 60 के लगभग हाज़री थी। इस सभा में बताया गया कि देव समाजी होकर भी और बाहर की दुनियां में किसी को अपनी ग़ल्ती नज़र नहीं आती। हम सब को गुरू महाराज की ज्योति की अतिशय अवश्यकता है क्योंकि गुरू महाराज की ज्योति और तेज के बिना किसी मनुष्य का भी ध्यान अपनी नीचताओं वा दोषों की ओर नहीं जा सकता। इस सारे संसार में हमें हमारा नीच वा हानि कारक रूप दिखाने का कोई प्रबन्ध नहीं। इस दर के बिना यह काम कहीं नहीं होता और न हो सकता है। सभापति जी ने अपने जीवन की उदाहरण देकर बताया कि कैसे उन्हें रोशनी में अपना खराब वा घटिया रूप दिखाई दिया है। गुरू की शक्ति ने उससे कुछ निजात दी है। गुरू के दरबार में झुकते हुए क्या अपनी और क्या और जनों में नीच जीवन मिटाने वाले प्रभावों की महिमा बताई। सभा से हाजरीन ने अच्छे प्रभाव हासिल किए।

5.3.2012 सुबह 9 बजे : - सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, जिसमें बार बार यह बात समझाई कि धर्म का सम्बन्ध हमारे अच्छे कर्मों में निहित है। अच्छे भावों को पैदा करके ही हम धर्मवान बन सकते हैं। भिन्न भिन्न अच्छे भावों का ज़िकर करते हुए सम्मान वा श्रद्धा भाव के अन्तर को समझाया। इन भावों को पैदा किए बिना मनुष्य सुखी नहीं रह सकता। हानियों से नहीं बच सकता। अच्छा सम्बन्धी भी नहीं बन सकता। गुरू उच्च भाव पैदा करते हैं, उच्च भाव पैदा करने की बार बार प्रेरणा की गई।

शाम 8 बजे की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें 60 के लगभग जन शामिल हुए। सभापति जी ने नाना सम्बन्धों में उच्च व्यवहारों की अवश्यकता को बताया। शुक्रगुज़ारी के भाव की सुन्दर उदाहरणें पेश की। श्रीमान राम सिंह जी ने जिस प्रकार अपनी पत्नी की सेवा की, उसका वर्णन किया।

एक कृत्घन पति वा पत्नी की हृदय स्पर्षी घटनाएं बताई। उपकारी भाईयों का रूप बताया। यह सभा बहुत अच्छे प्रभाव डालने वाली थी। अन्त में एक बीबी ने अपने देवर के उपकारों का भरे दिल से वर्णन किया।

6.3.2012, सुबह 9 बजे यह सभा श्रीमान बदलेव सिंह जी ने करवाई इस सभा में हाज़री 100 के ऊपर थी। इसमें श्रीमान जी ने गुरू महाराज की सम्बन्ध तत्व की शिक्षा का वर्णन किया। पति पत्नी के धर्मगत सम्बन्ध का बहुत सुन्दर दृष्टांतों द्वारा वर्णन किया। यह सम्बन्ध मित्रवत सम्बन्ध है। सम्बन्ध का आधार स्वार्थ नहीं बल्कि उच्च भाव अर्थात् श्रद्धा सन्मान और शुक्रगुजारी है, जिससे सम्बन्ध स्वर्गिय बन जाते हैं। श्रद्धेय पी०वी० कनल जी के स्वर्गिय सम्बन्ध का बहुत हृदय स्पर्षिय वर्णन किया। श्रीमान नौध सिंह जी के सुन्दर भावों का वर्णन किया। सभा दौरान बहुत सारे जन श्रद्धा और शुक्रगुजारी के आंसू बहा रहे थे। बहुत ही प्रभाव शाली मण्डल बना। बाद में 35-40 पति पत्नी ने एक दूसरे के गले में हार डालकर प्रणाम वा सन्मान का साधन किया। बाद में 100-125 जनों की मिठाई द्वारा सेवा की। श्रीमान बलदेव सिंह जी मल्लेका ने अपने बेटे की शादी की खुशी में 2100 रू० दान किया। 2150 रू० और दान एकत्र हुआ। एक नया मासिक पत्र जारी हुआ।

पदमपुर :- दुपहिर बाद तीन धर्म सम्बन्धियों को लेकर श्रीमान बलदेव सिंह जी यहां पहुंचे। रात को मन्दिर में सभा की गई। सभा में बताया गया कि हर वस्तु पर नेचर के नियमों का राज है। धर्म के भी नियम हैं, जैसे सेहत बनाने वा विद्या प्राप्त करने के नियम हैं। मनुष्य को उच्च असरों में बैठने की अवश्यकता है। जो जन उच्च जनों की संगत करेंगे वही भले बनेंगे। वही श्रेष्ट बनेंगे नीच संगत में नीच बनना अवश्यक है। उच्च संगत की बरकतें बताई। हाजरीन ने कुछ सवाल पूछे। सभापति जी ने उत्तर दिए और प्रश्न पूछने के लिए उत्साहित किया। सभा में 2 साथी सेवक गज सिंह वाला से आकर भी शामिल हुए।

7 मार्च को सुबह सभा हुई, इसमें बताया कि यह सचाई मनुष्य को समझ नहीं आती कि धर्म पाए बिना जीवन निष्फल है। इसके बिना मनुष्य पशु समान है। पशु भी पेट पूर्ति में जीवन बिता देते हैं। मनुष्य भी पेट पूर्ति वा नीच सुखों की पूर्ति में जीवन व्यतीत कर देता है। और अपना जीवन बर्बाद कर लेता है। फिर बताया कि मनुष्य को पहचाना कैसे जाता है। मनुष्य की महानता चार पक्षों में पहचानी जाती है। पहला मनुष्य का निजी जीवन उसके जीवन का लक्ष्य, वह किसलिए जीता है, मनुष्य को क्या शिक्षा प्राप्त हुई, उसकी उपलब्धिया क्या हैं और उसके जीवन से कौन सी भलाई निकलती है।

रात 8.30 बजे सभा की गई। इसमें सभापति जी ने बताया कि नेचर क्या है? उसके नियम क्या हैं? इन विषयों को विस्तार से समझाया गया। नेचर के कई क्षेत्रों में विकास के नियम को समझाया गया। नेचर के विकास के नियम ने कैसे काम किया। देवात्मा वा देव धर्म को विकास के नियम को समझे बिना नहीं समझा जा सकता।

8 मार्च सुबह इस सभा में बताया गया कि पशु अन्धेरे का जीव है, हम मनुष्य भी अन्धेरे में हैं। हमें अपने भावों का ज्ञान नहीं। उनके बढ़ने, घटने अपने भले, बुरे का ज्ञान नहीं। न आप लग सकता है। हम हानि उठाते हैं और जीवन बर्बाद करते हैं। यह दर

हमारा अन्धेरा दूर करता है और हमें भले, बुरे की सोझी देता है।

4 बजे बाद दुपहिर :- 6 जन जो सेवक वा मुख्य सत्संगी थे, वह श्रीमान जी पास पहुंचे और 2 घण्टे तक हितकर बातचीत हुई। बातचीत को समझने में सब ने काफी सहयोग दिया। उन्हें बताया गया कि इस प्रकार अपनी अवस्था अनुसार सवाल, जवाब से अधिक लाभ होता है।

रात को 8.30 बजे :- इसमें बताया गया कि कैसे पशुजगत से मनुष्य ने विकसित होकर, धरती, पशु पौधों का किस प्रकार विकास किया हैं किस प्रकार जिसमानी ईलाज, शिक्षा, अमन, प्रबन्ध का विकास हुआ। परन्तु मनुष्य को अपना ज्ञान नहीं और न हो सकता था। नेचर के विकास क्रम में देव शक्तियां लेकर देवात्मा का आर्विभाव हुआ है, जिन्होंने मनुष्य जीवन का ज्ञान खोजा और उसका प्रचार किया। उनकी ज्योति हमें अपना ज्ञान देती है, हमारे आत्मिक रोगों को दिखाती है। उनका तेज रोगों से मुक्त होने का बल देता है। देवात्मा का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति नहीं, रोगी रूहों को बचाना है। ऐसा कार्य आजतक किसी ने नहीं किया। वह सूर्य की तरह रोगी रूहों को अपने प्रभावों से बचाते है, रूहें अपनी योग्यतानुसार बच रही हैं, वह उच्च भाव पैदा करके मनुष्यों को नया रूप दे रहे हैं।

9 मार्च सुबह की सभा में बताया गया जहां ईमानदारी नहीं, पवित्रता नहीं शुक्रगुजारी नहीं वहां धर्म नहीं, वहां साधारण इन्सानियत भी नहीं, धर्म तो क्या होना था। कृतज्ञता के भाव का वर्णन किया गया कि दूसरों के उपकार हमारी छाती पर बोझ हैं। सभापति जी ने अपनी माता के, अध्यापिकों के, डाक्टरों, धर्म सम्बन्धियों के वा उच्च आत्माओं के उपकारों का भरे दिल से वर्णन किया। अच्छा वातावरण बना। एक जन ने अपने साढू के उपकारों को वा गुणों का जोश से भरकर ब्यान किया। एक और जन को अपने माता - पिता, पत्नी और अपने अध्यापिक के उपकार महसूस हुए।

रात 8.30 बजे से 10 बजे तक एक सभा हुई। इस सभा में बताया गया कि मनुष्यों वा जीव जन्तुओं को परमात्मा चलाता हैं उसके हुकम के बिना पत्ता नहीं हिलता, यह गल्त है। सचाई यह है कि मनुष्य को उसके सुख के इश्क चलाते हैं। मनुष्य उनसे अनजान है। वह अपने आप अपने परिचालक सुख अनुरागों को देख नहीं सकता।

सत्गुरू अपनी रोशनी में दिखाते हैं और उनसे बचाते हैं। नीच सुखों की गुलामी की उदाहरणें दी गई। गुरू महाराज के कारज की विलक्षणता पेश की गई। हाजरीन को अधिक से अधिक लाभ उठाने की प्रेरणा की गई।

10 मार्च सुबह की सभा में बताया गया कि मनुष्य मात्र का शरीर एक है, रोग एक हैं, विद्या एक है, फजिक्स, मैडिकल और Chemistry एक है। मनुष्य के आत्मा की बनावट एक है। सुखों के इश्क सब में हैं। आत्मा के रोग एक है और उनका ईलाज भी एक हैं। देव समाज के धर्म साधन सब मनुष्य मात्र के लिए एक है। गुणचिन्तन सब के लिए लाभकारी हैं, अवगुण चिन्तन सबके लिए हानिकारक हैं। शुक्रगुजारी, पर सेवा, अपनी कमियां देखना सबके लिए लाभ कारी हैं, विज्ञान की उन्नति से सब धर्म मिथ्या साबित होंगे, एक वैज्ञानिक धर्म ही सबका धर्म बन जाएगा। धर्म साधन एक हो जाएंगे। गुरू और उसकी शिक्षा भी एक हो जाएगी। विकास क्रम में ऐसा होना अवश्यक है।

रात 8.30 बजे :- इस सभा में बताया गया कि दुनियावी धर्मों की पूजा, पाठों वा कीर्तिनों से मनुष्य का ध्यान अपनी परिचालिक सुख लालसाओं की ओर नहीं जाता। यह सुख लालसाएं मनुष्य का समूचा जीवन वर्बाद कर देती है। मनुष्य का ध्यान इस ओर कोई नहीं फेरता और न ही फेर सकता है। इसलिए ज्यों ज्यों धर्म बढ़ते गए, मनुष्य बर्बाद होता गया। सुख लालसाओं को ठोस उदाहरणों द्वारा समझाया गया। केवल देवात्मा की देव ज्योति इन सुख लालसाओं को दिखाने की समर्थ्य रखती है और उनसे बचने की प्रेरणा देती है। बर्बाद होते जीवन बचाए जाते हैं। इनकी उदाहरणें दी गई।

11 मार्च की सुबह की सभा यहां पर आखरी सभा थी। यह सभा पति पत्नी के सम्बन्ध में रखी गई। देवात्मा का सम्बन्धों में अद्वितीय कारज पेश किया गया। बिगड़ते सम्बन्धों का भयानक दृष्य खींचा गया। भगवान कैसे इस सम्बन्ध को सुधारते हैं, उसकी सुन्दर घटनाएं पेश की गई। हाजरीन ने बहुत उत्साह अनुभव किया। कई पति पत्नी, सन्मान सहित एक दूसरे का अर्चन करने, भेंट वा धन्यवाद देने के लिए तैय्यार हो गए। गुरू को धन्यवाद देकर यह सभा समाप्त हुई। शाम को श्रीमान जी गजसिंह पुरा गए, डाक्टर मुनशा सिंह जी भी साथ गए।

गज सिंह पुर :- यहां पर रात को श्रीमान दूनीचन्द जी के घर में सभा रखी गई। वहां परिवारिक जन शामिल हुए। एक सत्संगी भी आए। धर्म क्या है और क्या नहीं है, इसके विषय में जानकारी दी गई। अगली सुबह फिर सभा की गई, इसमें 4 - 5 नये जन आकर शमिल हुए। इसमें बताया गया कि मनुष्य को चलाने वाली उसकी भीतर की शक्तियां है, कोई ईश्वर वा परमात्मा नहीं। भगवान देवात्मा मनुष्यों को उनकी भयानक शक्तियां दिखाकर उनसे मुक्त करवाते हैं। नये जनों ने अच्छी दिलचस्पी दिखाई। यहां से, 12 मार्च को श्रीमान जी अपने साथी समेत थराजवाला गए।

थराजवाला :- उसी शाम 5 बजे एक सभा रखी गई। इसमें धर्म की ज़रूरत के बारे बताया गया। यदि अनुचित दुखों से बचना है, तो धर्मवान बनना पड़ेगा।

13.3.2012 सुबह की सभा में बताया कि बाहर के गांव के असर लोगों को सुन्न कर देते हैं। देव प्रभाव मनुष्य को इस अवस्था से निकालते हैं। यदि अधिकारी आत्मा उच्च असरों में रहें तो उन्हें और सोझी आती है। नहीं तो बेसुधि में ही जीवन व्यतीत हो जाता है, और इस बेसुधि का भी पता नहीं लगता।

शाम को सभा में नीच शक्तियों का भयानक रूप प्रगट किया गया। नशे, विषय, धन, आकड़ और गुस्सा कैसे मनुष्य को बर्बाद करते हैं। ऐसे जनों को गुरू महाराज कैसे बचाते हैं, यह सचाई पेश की गई।

14.3.2012 सुबह 9 बजे की सभा यहां के दौरे की आखरी सभा थी। इसमें बताया गया कि मनुष्य को उसका वातावरण बहुत जोर से प्रभावित करता हैं। वह अपने रंग में ढाल लेता है। अच्छा वातावरण मिलना बहुत कठिन है। देव समाज ऐसा उच्च वातावरण प्रदान करती है। बच्चों को अच्छी खुराक, वस्त्र शिक्षा के साथ 2 अच्छे वातावरण की अवश्यकता है। देव समाज के वातावरण के साथ जुड़ने वा कदर करने की अवश्यकता है। बेकदरी के बहुत नुकसान हैं। जय ध्वनि से सभा समाप्त हुई। मन्दिर की सेवा के लिए भी संगत ने विचार किया।

Published on 5th of the month
20
अप्रैल - 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पृष्ट 13 का बाकी

ध्यान रखोगे। कल्पना करो यह एक पिता अपने बेटे से कह रहा है!

क्या तुम्हें याद है? बाद में जब मैं पुस्तकालय में पढ़ रहा था तब तुम डरे हुए से आँखों में घायल सा भाव लिए आए। मैंने पेपर से नज़र उठा कर इस व्यवधान से अधीर होकर जब देखा तुम दरवाजे पर ही सहम गए। "तुम्हें क्या चाहिए? मैं चिल्लाया।"

तुम कुछ न बोले लेकिन एक तेज छलांग लगा कर अपनी बाहें मेरे गले में डाल कर तुमने मुझे चूम लिया और प्यार से तुम्हारी छोटी छोटी बाहें और कस गई। प्यार जो तुम्हारे दिल में उमड़ रहा था और जो मेरी उपेक्षा से भी कम न पड़ा था। फिर तुम चले गए।

हाँ बेटे उसके थोड़े ही समय बाद पेपर मेरे हाथों से फिसल गया और मेरे मन में तीव्र भय आ गया। अभ्यास ने मेरा क्या हाल बना दिया है। दोष देखने की आदत, झिड़कने की आदत। यह मेरी ओर से बेटे को इनाम था। यह बात नहीं कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता था, यह तो इसलिए था कि मैं बच्चों से बहुत अधिक अपेक्षा करता था। मैं तुम्हें अपनी आयु के मापदंड से मापता था।

तुम्हारे भीतर बहुत कुछ अच्छाई थी, सच्चाई थी, सुन्दरता थी। तुम्हारा छोटा सा दिल बड़ी पहाड़ी के ऊपर के उषाकाल की तरह बड़ा था। यह तुम्हारे भागकर मेरे पास आने और मुझे चूम कर Good Night करने से दिखाई देता है। आज और किसी बात का महत्व नहीं है, बेटे! मै अन्धेरे में तुम्हारे बिस्तर के पास आया हूं और झुका हूं, शर्मिन्दा होकर!

यह थोड़ा सा परिशोध है, अगर मैं तुम्हें जागते हुए बताऊं तो तुम नहीं समझ सकोगे इन बातों को लेकिन कल मैं सचमुच में वास्तविक पिता हूंगा, मैं तुम्हारे साथ लाड प्यार करूंगा, तुम दुःखी होगे तो दुखी हूंगा, तुम हंसोगे तो हंसूगा। जब कोई अधीरता का शब्द मुंह से निकलने लगेगा तो मैं अपनी जबान को काट लूंगा। मैं यह जाप करता रहूंगा- "यह छोटा सा बच्चा है, छोटा सा बच्चा है।"

मुझे डर हैं कि मैंने तुम्हें आदमी समझ लिया है। लेकिन अब जब मैं तुम्हें अपने बिस्तर में सिकुड़ा सा देख रहा हूं- तो देख रहा हूं कि तुम अभी भी एक शिशु हो। कल तुम अपनी माँ की बाहों में थे, उसके कंधे पर सिर रखे हुए। मैंने तुमसे बहुत अधिक चाहा, बहुत अधिक चाहा।

एक पिता

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts